रूस और यूक्रेन संघर्ष का कृषि पर प्रभाव

निलेश शर्मा
पी.एच .डी. आर.वी.एस. के. वि. वि. ग्वालियर (म.प्र.)
Email id: nileshsharma233@gmail.com

कृषि में विश्व पटल पर रूस और युक्रेन कि स्थिति:

वर्तमान में यूक्रेन और रूस कृषि वस्तुओं की वैश्विक आपूर्ति के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वैश्विक स्तर पर ये दोनों देश (रूस और यूक्रेन) क्रमशः वैश्विक गेहूं उत्पादन का 14: (१०: रूस तथा ४: युक्रेन) उत्पादन करने के साथ साथ क्रमशः चौथे और सातवें स्थान पर आते है। दोनों देश गेहूं के प्रमुख निर्यातक भी हैं, जो कूल वैश्विक गेहूं निर्यात का लगभग 30: निर्यात करते हैं। वहीं अगर बात करें मक्का कि तो युक्रेन और रूस मक्का उत्पादन में क्रमशः छटे व सातवें स्थान पर आते है और निर्यात के मामले में दोनो देश क्रमशः १५: निर्यात करते हुये युक्रेन चौथे तथा २.३: कि हिस्सेदारी के साथ रूस छःटे स्थान पर आता है।

रूस और यूक्रेन, जौ उत्पादन में वैश्विक स्तर लगभग 19: कि हिस्सेदारी रखते है वहीं जौ के निर्यात में लगभग 32: कि हिस्से. दारी रखते है। वहीं अगर बात करें सोयाबीन कि तो सोयाबीन के उत्पादन और निर्यात में दोनों देश दुनिया में शीर्ष 10 में स्थान रखते लेकिन वैश्विक उत्पादन का केवल 2.3: और वैश्विक निर्यात का केवल 2.1: का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। सूर्यमुखी के तेल के उत्पादन और निर्यात में पूरी दुनिया में युक्रेन और रूस का ही दबदबा है ये दोनों देश सभी आंकड़ों में प्रदान किए गए उत्पादन और निर्यात शेयर डेटा की गणना यूएसडीए विदेशी कृषि सेवा के उत्पादन, आपूर्ति और वितरण डेटाबेस (यूएसडीए–एफएएस पीएसडी) से की जाती है।

रूस, यूक्रेन और भारतीय कृषि बाजार

यूक्रेन और रूस, भारत के प्रमुख व्यापारिक भागीदार तो नहीं हैं, लेकिन 2021 में भारत और यूक्रेन के बीच द्विपक्षीय व्यापार हुवा जो कि 3.1 अरब डॉलर का था। भारत से युक्रेन का निर्यात लगभग 510 मिलियन डॉलर रहा जिसमें अधिकांशतः निर्यात फार्मा उत्पाद (32 प्रतिशत), जबकि अन्य निर्यातों में लोहा और इस्पात, कृषि–रसायन, दूरसंचार उपकरण और कॉफी शामिल थे। वही दूसरी ओर यूक्रेन से 2021 में आयात लगभग 2.6 अरब डॉलर का रहा जिसमें 1.85 अरब डॉलर वनस्पति तेल जिसमें मुख्य रूप से सूरजमुखी का तेल शामिल था। दूसरी ओर, भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार पिछले साल 11.9 अरब डॉलर का था जिसमें भारत ने रूस को लगभग 3.3 बिलियन डॉलर के सामान का निर्यात किया, जिसमें फार्मास्युटिकल उत्पाद सबसे ज्यादा निर्यात किया गया जो कि लगभग 542 मिलियन डॉलर का रहा द्य इसके अलावा, भारत ने रूस को इलेक्ट्रॉनिक्स, लोहा और इस्पात, चाय और ऑटो घटकों का निर्यात किया।

पिछले साल रूस से भारत में आयात 8.6 अरब डॉलर का रहा, जिसमें भारत कच्चे तेल, पेट्रोलियम उत्पादों, सोना, कीमती पत्थरों, कोयला, उर्वरक और कीमती धातुओं की सो. सिंग कर रहा था। रूस भारत का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता देश भी है, जो हमारे कुल हथियारों के आयात का लगभग आधा हिस्सा है।

रूस और यूक्रेन संघर्ष का भारतीय कृषि उद्योग पर प्रभाव

रूस और यूक्रेन संघर्ष से भारतीय खाद्य तेल उद्योग काफी चिंतित रहेगा। साथ ही रूस और उक्रेन से आयात होने वाली वस्तुओं पर समय लग सकता है जिसके कारण खाद्य तेलों के भाव में वृद्धि देखि जा सकती है मुख्यरूप से सूरजमुखी के तेल की कीमत बढ़ सकती है। भारत के सूरजमुखी के तेल का 90 प्रतिशत हिस्से कि आपूर्ति यूक्रेन और रूस के द्वारा कि जाती है। यूक्रेन के कृषि मंत्रालय के अनुसार भारत, यूक्रेन के कृषि उत्पादों का सबसे बड़ा बाजार है। पूरी दुनिया में यूक्रेन और रूस सूरजमुखी के तेल के प्रमुख आपूर्तिकर्ता हैं एवं नवंबर 2020 और अक्टूबर 2021 के बीच, भारत ने कुल 18.93 लाख टन कच्चे सूरजमुखी के तेल का आयात किया, इसमें से अकेले यूक्रेन ने 13.97 लाख टन और रूस ने भारत को 2.22 लाख टन सूरजमुखी तेल का निर्यात किया।

मौजूदा रूस–यूक्रेन संकट से सूरजमुखी तेल की मांग और आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित हुई है। नतीजतन, इसलिए सूरजमुखी के तेल के भाव में बढोतरी देखि जा सकती है। इस स्थिति में भारत को सूरजमुखी के तेल के लिए अन्य देशों कि तरफ देखना पड़ेगा जेसे कि अर्जेंटीना, तुर्की आदि साथ ही अन्य खाना पकाने के तेल जैसे सोयाबीन का तेल, सरसों का तेल, ताड़ के तेल और मूंगफली के तेल आदि के उपयोग का भी प्रस्ताव भी लोगो के सामने रखना चाहिए ताकि खुदरा कीमतों में वृद्धि न हो।

वर्तमान में, भारत का गेहूं का केंद्रीय पूल 24.2 मिलियन टन है, जो बफर और रणनीतिक जरूरतों से दोगुना है। इस स्थिति में जब गेहूं के दो सबसे बड़े उत्पादक और निर्यातक देशों (युक्रेन और रूस) के बीच आपसी संघर्ष चल रहा हे, इसे मोके पर भारत गेहूं का अपना निर्यात बड़ा सकता है जिससे भारतीय किसानो को भी लाभ मिलेगा और वैश्विक स्तर पर भारत अपनी एक अलग पहचान बनाएगा।